ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class VII

Subject- Hindi Second Language

Topic- नीलकंठ

By- नीलम सौंखला

©ISWK

नीलकंठ

लेखिका-महादेवी वर्मा

ले खका का परिचय

- महादेवी वर्मा (26 मार्च, 1907 — 11 सतंबर, 1987) हिन्दी की सर्वा धक प्रतिभावान कवयित्रियों में से हैं। वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के प्रमुख स्तंभों जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और सु मित्रानंदन पंत के साथ महत्वपूर्ण स्तंभ मानी जाती हैं|

- उन्हें *आधुनिक मीरा* भी कहा गया है।

- क व निराला ने उन्हें "हिन्दी के वशाल मन्दिर की सरस्वती" भी कहा है। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्य जीवन की शरूआत की और अंतिम समय तक वे प्रयाग महिला वद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं। उनका बाल- ववाह हुआ परंतु उन्होंने अ ववाहित की भांति जीवन-यापन कया। प्रतिभावान कवयित्री और गदय ले खका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ साथ कशल चत्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। उन्हें हिन्दी साहित्य के सभी महत्त्वर्पूण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। गत शताब्दी की सर्वा धके लौक प्रय महिला साहित्यकार के रूप में वे जीवन भर आदरणीय बनी रहीं।

- वे भारत की 50 सबसे यशस्वी महिलाओं में भी शा मल हैं।

मोर-मोरनी का जोड़ा

नामकरण

नीलकंठ

राधा

पाठ का सारांश

महादेवी वर्मा अपने किसी अतिथि को स्टेशन पहुँचा कर लौट रही थीं कि उन्हें उस दुकान का ध्यान आ गया जहाँ तरह-तरह के जानवर और पक्षियों के बच्चों को बेंचा जाता था। उनके आदेश पर ड्राइवर ने गाड़ी उसी ओर घुमा दी। दुकान पर गाड़ी के रुकने से पहले ही चिड़ियावाले बड़े मियाँ ड्राइवर को इशारे से रुकने को कहने लगे। लेखिका को सलाम कर उन्होंने बताया कि शंकरगढ़ का कोई शिकारी दो मोर के बच्चे दे गया है। एक मोर और एक मोरनी। मोर के पंजों से दवा बनती है, इसलिए बहुत से लोग उसे खरीदने आए थे परंतु लेखिका का नाम लेकर बड़े मियाँ ने उन्हें बेचने से मना कर दिया। लेखिका जानती थीं कि बड़े मियाँ की बातें जल्दी समाप्त नहीं होगी। अतः उन्होंने मोर के बच्चों के पैंतीस रुपए देकर उनसे पीछा छुड़ाया और पिंजड़ा लेकर गाड़ी में बैठ गई। कार में जल्दी समाप्त पिंजड़ा रखते हीं दोनों पक्षी-शावक छटपटाने लगे और उनकी हलचल से पिंजड़ा मानो सजीव और उड़ने योग्य हो गया।

घर पहुँचने पर सबने लेखिका से कहा कि वह ठगी गई है। वे मोर के नहीं तीतर के बच्चे हैं। लेखिका यह सुन चिढ़ गई। उन्होंने पिंजड़ा अपने अध्ययन कक्ष में रखवा लिया। पिंजड़े का दरवाजा खोलते ही दोनों निकलकर कमरे में ही कहीं खो गए। उनके लिए कटोरे में सत्तू की गोलियाँ और पानी रखा गया। दोनों बच्चे मेज के नीचे तो कभी अलमारी के पीछे लुकते-छिपते रहे। दिन भर इधर-उधर छुपे रह कर रात में वे रद्दी की टोकरी में प्रकट होते। एक दो दिन में उनका डर खत्म हो गया तो वह पूरे कमरे का चक्कर लगाने लगे। उनके कारण लेखिका को कमरे में दरवाजे सदा बंद रखने पड़ते थे। उन्हें डर था कि कहीं उनकी पालतू बिल्ली चित्रा उन पक्षी शावकों को अपना शिकार न बना ले।

मोर के बच्चों के कारण जब लेखिका का कमरा गंदा होने लगा तो उन्होंने उन्हें उस बड़े जाली घर में पहुँचा दिया, जहाँ उनके अन्य पालतू पशु रहते थे। मोर के बच्चों के वहाँ पहुँचते ही हलचल-सी मच गई। कबूतर, खरगोश और तोते कौतूहल से भर कर उसे देखने लगे। उन्होंने उन नए मेहमानों का स्वागत वैसे ही किया जैसे परिवार में किसी नववधू का होता है।

धीरे-धीरे मोर के बच्चे बड़े होने लगे। मोर के सिर की कलगी बड़ी, घनी ओर चमकीली हो गई। चोंच टेढ़ी और तेज हो गई तथा गोल आँखों में नीली आभा चमकने लगी। नीली गर्दन पर धूप छाँही तरंगे उठती-गिरती प्रतीत होती थीं। लंबी पूंछ और पंखों में इंद्रधनुषी रंग झलकने लगा। मोर के रूप के साथ उसकी भाव-भंगिमाएँ भी मनमोहक थी। मोरनी का विकास तो उसकी तरह चमत्कारिक नहीं हुआ, लेकिन लंबी धूपछाँही गर्दन, चंचल कलगी और पंखों की श्याम-श्वेत पत्रलेखा उसे मोर की उपयुक्त संगिनी प्रमाणित कर रही थी।

मोर की गर्दन नीली होने के कारण लेखिका ने उसे 'नीलकंठ' नाम दिया तथा मोरनी को सदा उसके आगे पीछे घूमते रहने के कारण 'राधा' नाम दिया।

लेखिका कहती है कि उन्हें पता नहीं चला कि अपने स्वभाव और संस्कारवश मोर ने स्वयं को अन्य सभी जीवों का रक्षक और सेनापति कब नियुक्त कर लिया। वह सबको लेकर सुबह ही उस स्थान पर पहुँच जाता जहाँ दाना बिखेरा जाता था। वह घूम-घूमकर सबकी रखवाली करता और अगर किसी ने गड़बड़ की तो उसे दंडित भी करता था। वह चोंच से खरगोश के बच्चों का कान पकड़कर तब तक उठाए रहता जब तक वे चीखने न लगते। उसके भय से फिर कोई जीव उसे नाराज करने का साहस न करता। मोर का उन जीवों के प्रति प्रेम भी असाधारण था। जब वह मिट्टी पर अपने पंख फैलाकर बैठ जाता तो सब उसकी लंबी-घनी पूँछ पर छुआ-छुऔअल जैसा खेलते।

नीलकंठ

राधा

एक दिन न जाने कैसे एक साँप ने जाली के अंदर पहुँच एक शिशु खरगोश को मुँह में दबा लिया। खरगोश की चीं-चीं को दूर झूले पर सो रहे नीलकंठ ने सुना। वह एक झटके में नीचे पहुँच गया और चोंचे से मार-मारकर साँप को अधमरा कर दिया। खरगोश का बच्चा उसकी पकड़ से छूट तो गया पर वहीं बेसुध पड़ा रहा। इस बीच राधा ने अपनी मंद केका से सबको इस असामान्य घटना से अवगत करा दिया था। वहाँ सबके पहुँचने तक नीलकंठ साँप के टुकड़े कर चुका था। रात भर वह घायल खरगोश को अपने पंखों के नीचे रखे ऊष्णता देता रहा। लेखिका कहती है कि मोर के रूप और स्वभाव को देखकर यह समझ आ जाता है कि कार्तिकेय ने उसे अपने वाहन के रूप में क्यों चुना होगा।

मोर एक कला-प्रिय वीर पक्षी है परंतु हिंसक नहीं है। वसंत आगमन पर मेघों की सांवली छाया में अपने इंद्रधनुषी पंख फैलाकर नीलकंठ एक सहजात लय-ताल में नाचता रहता। राधा उसके समान तो नृत्य नहीं कर पाती थी परंतु उसकी गतिविधियों में भी एक पूरक ताल-परिचय मिलता था।

नीलकंठ ने न जाने कैसे जान लिया कि उसका नृत्य लेखिका को बहुत भाता है। वह अक्सर लेखिका के अनेक जालीदार घर के पास पहुँचते हीं अपना नृत्य आरंभ कर देता था। अतिथियों के आगमन पर भी उसका नृत्य शुरू हो जाता था। अनेक विदेशी महिलाओं ने तो उसकी मुद्राओं को अपने प्रति व्यक्त सम्मान समझकर उसें 'परफेक्ट जैंटिलमैन' की उपाधि दे दी थी।

एक दिन किसी कार्यवश लेखिका बड़े मियाँ की दुकान के सामने से गुजरी तो उन्होंने फिर से गाड़ी रोक ली। उनके पास एक मोरनी थी जिसके पंजे टूटे हुए थे। यह चिड़िमार की हरकत थी। लेखिका ने सात रुपए में उसे खरीद लिया। पंजों की मरहमपट्टी करने पर एक महीने में वह ठीक हो गई और डगमगाती हुई चलने लगी। उसे जाली घर में पहुँचा दिया गया और नाम रखा गया 'कुब्जा'। नाम के अनुरूप ही उसका स्वभाव भी सिद्ध हुआ। नीलकंठ और राधा को वह जब भी साथ देखती, उन्हें मारने दौड़ती। उसने चोंच से मार-मारकर राधा की कलगी और पंख तोड़ डाले थे। नीलकंठ उससे दूर भागता, पर वह उसके साथ रहना चाहती। किसी जीव जंतु से उसकी मित्रता न थी। उसने राधा के दो अंडे तोड़ डाले। उसके कारण राधा और नीलकंठ की प्रसन्नता का अंत हो गया। कई बार नीलकंठ जाली से निकल कर भाग जाता। एक बार कई दिन तक वह भूखा प्यासा आम के पेड़ पर छिपा बैठा रहा। उसकी चाल में थकावट आ गई थी और आँखों में शून्यता रहती थी। लेखिका को आशा थी कि कुछ दिनों में सब में मेल हो जाएगा, परंतु ऐसा नहीं हुआ। तीन-चार माह के बाद अचानक एक दिन सुबह लेखिका ने नीलकंठ को मरा हुआ पाया। न उसे कोई बीमारी हुई थी और न ही उसके शरीर पर चोट का कोई निशान था। लेखिका ने उसे अपनी शाल में लपेट कर संगम में प्रवाहित कर दिया।

राधा नीलकंठ की प्रतीक्षा करती रहती। उसे आशा थी कि पहले की ही तरह वह फिर लौट आएगा। कुब्जा ने भी कोलाहल के साथ उसे ढूँढना शुरू किया। वह आम, अशोक, कचनार की शाखाओं में उसे ढूँढती रहती। एक दिन आम की शाखा से उतरते ही लेखिका की अलशेसियन कुतिया उसके सामने पड़ गई। स्वभाववश कुब्जा ने चोंच से उस पर प्रहार किया तो कजली के दो दाँत उसकी गर्दन पर लग गए। परिणामतः उसकी मृत्यु हो गई। इन तीनों पक्षियों की विभिन्न प्रकृति लेखिका के लिए विशेष महत्व रखती थी।

राधा सदा नीलकंठ के इंतजार में रहती थी। आषाढ़ में मेघों के छाते हीं वह ऊँची आवाज में केका कर नीलकंठ को पुकारने लगती। नीलकंठ उसकी यादों में सदैव उसके साथ रहा।

__शब्दार्थ__–पृष्ठ संख्या-108 : ***अतिथि***–मेहमान। ***आदेश***–आज्ञा। ***निकट***–नजदीक। ***संकेत***–इशारा। ***आरंभ***–शुरू। ***चिड़िमार***–चिड़ियों को मारने वाला। ***मासूम***–भोली। ***परिचित***–जान-पहचान। ***अनुसरण***–नकल करना। ***संकीर्ण***–संकुचित। ***निरीक्षण***–देखभाल।

पृष्ठ संख्या-109 : ***कीमत***–मूल्य। ***मूंजी***–कंजूस। ***ख्याल***–साधारण। ***मुनासिब***–सही। ***गुप्तवास***–छिपने की जगह। ***आश्वस्त***–संतुष्ट। ***आविर्भूत***–उत्पन्न होना। ***आक्रमण***–हमला। ***सर्वथा***–हमेशा। ***चेष्टा***–कोशिश। ***अभिमानिनी***–घमंडी। ***अपरिचित***–अंजान। ***अनुमान***–अंदाज। ***परिणाम***–फल। ***शोध***–खोज।

पृष्ठ संख्या-110 : ***कायाकल्प***–सुधार होना, रुप बदलना। ***सामान्य***–साधारण। ***कुतूहल***–हैरानी। ***नववधू***–नई दुलहन। ***आगमन***–आना। ***सभ्य***–शिष्ट। ***परीक्षण***–परखना। ***बंकिम***–टेढ़ी। ***पैनी***–तेजी। ***नीलाभ***–नीली। ***ग्रीवा***–गर्दन। ***भंगिमा***–हाव-भाव। ***उद्दीप्त***–चमकने लगा। ***गरिमा***–गौरव। ***रंजित***–रंगीन। ***सुकुमार***–नाजुक। ***आँका***–अनुमान लगाना, चित्रित। ***श्याम***–काला। ***श्वेत***–सफेद। ***मंथर गति***–धीरे-धीरे। ***सहचरिणी***–साथ-साथ चलने वाली। ***सौंदर्य***–शोभा। ***अनुभव***–ज्ञान।

पृष्ठ संख्या-111 : ***नामकरण***–नाम रखना। ***संरक्षक***–रक्षा करनेवाला। ***नियुक्त***–तैनात। ***चंचु-प्रहार***–चोंच से मारना। ***दंड***–सजा। ***आर्तक्रंदन***–पीड़ा से कराहना। ***कर्णवेध***–कानों की बेधना।

पृष्ठ संख्या-112 : ***तीव्र***–तेज। ***चौकन्ना***–सतर्क। ***मंद-स्वर***–धीमी आवाज। ***सहज***–आसान। ***अधमरा***–आधा मरा हुआ। ***निश्चेष्ट***–बेहोश। ***शिशु***–बच्चा। ***उष्णता***–गर्मी। ***क्रूर***–हिंसक।

पृष्ठ संख्या-113 : ***नृत्य***–नाच। ***नित्य***–प्रतिदिन।

पृष्ठ संख्या-114 : ***सोपान***–सीढ़ी। ***तन्मय***–लीन। ***मंद***–धीमा। ***संकल्प***–निश्चय। ***मूँज***–लंबी पत्तियों वाली एक तरह की घास।

पृष्ठ संख्या-115 : ***समीप***–पास। ***छितरा***–फैलाना। ***कलह***–लड़ाई। ***पुचकार कर***–प्यार से बहलाकर। ***उपरांत***–बाद में। ***प्रतीक्षा***–इंतजार।

I. बहुविकल्पीय प्रश्न

(i) 'नीलकंठ' नामक पाठ किसके द्वारा लिखा गया है?

(क) डॉ. राम कुमार वर्मा (ख) महादेवी वर्मा

(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) प्रयाग शुक्ल।

ख

(ii) स्टेशन से लौटती लेखिका ने ड्राइवर से किधर चलने को कहा?

(क) सीधे घर चलने को (ख) पक्षी-जानवरों की दुकान की ओर

(ग) कार्यालय की ओर (घ) पुस्तकालय की ओर।

ख

(iii) मोर के दोनों बच्चों को चिड़ीमार कहाँ से पकड़ कर लाया था?

(क) शंकरगढ़ से (ख) रामगढ़ से

(ग) बाँधवगढ़ से (घ) शिवगढ़ से।

क

(iv) 'आखिर मेरे सीने में भी तो इनसान का दिल है'–यह वाक्य किसके द्वारा कहा गया है?

(क) शिकारी द्वारा (ख) लेखिका द्वारा

(ग) बड़े मियाँ द्वारा (घ) ड्राइवर द्वारा।

ग

(v) बड़े मियाँ के भाषण की तूफ़ानमेल के लिए कोई निश्चित स्टेशन नहीं है–का आशय है

(क) वे तूफ़ान मेल से यात्रा करते हैं (ख) वे मंजिल से पहले नहीं रुकते हैं

(ग) वे बहुत बातूनी हैं (घ) वे केवल काम की बातें ही करते हैं।

ग

(vi) लेखिका ने मोर के बच्चों को कितने रुपए में खरीदा?

(क) बीस रुपए में (ख) तीस रुपए में

(ग) पच्चीस रुपए में (घ) पैंतीस रुपए में।

घ

(vii) लेखिका ने उन शावकों के प्रति विशेष व्यवहार और तरीका क्यों अपनाया?

(क) सुंदर होने के कारण (ख) घरवालों द्वारा चिढ़ाए जाने के कारण

(ग) उनका मूल्य अधिक होने के कारण (घ) शावकों की उम्र कम होने के कारण।

ख

(viii) मयूर-शावक जहाँ रखे गए थे, उस कमरे का दरवाजा किस कारण से बंद रखना पड़ता था?

(क) पालतू कुतिया के डर से (ख) चित्रा नामक घरेलू बिल्ली के डर से

(ग) आगंतुकों के डर से (घ) साँप जैसे खतरनाक जीव के डर से।

घ

ले खका तीतर के बच्चे घर में ले आई थी तब यह इतने बड़े थे|

नीलकंठ च ड़्याघर की जाली के अंदर एक सेनापति की तरह रहता था|

मोर का वकास सौंदर्यमयी था ।

च ड़याघर का स्वामी नीलकंठ- नाचता हुआ ।

नीलकंठ-ने जब खरगोश की जान बचाई|

बादलों का घुमड़ना और मोर का नाचना

घायल मोरनी

कुब्जा ने चोंच से प्रहार कर राधा मोरनी के अंडों को तौड़ दिया था |

नीलकंठ का मर जाना ।

नीलकंठ का इंतजार करते हुए राधा |

कुब्ज़ा भी नहीं बच पाई ।

शब्दार्थ-

- शावक - बच्चा
- खा सयत - वशेषता
- अनुसरण - पीछे–पीछे चलना
- आ वर्भूत - प्रकट
- नवागंतुक - नया-नया आया हुआ
- मार्जारी - मादा बिल्ली
- सघन - बहुत घना
- ग्रीवा - गर्दन
- भं गमा - मुद्रा
- उद्दीप्त होना - चमकना
- आर्त क्रंदन - दर्द भारी आवाज़ में चीखना
- वस्मया भभूत - आश्चर्यपूर्ण
- केका - मोर की बोली
- अधर - बीच में

जीवन मूल्य-

- हमें पशु – पक्षियों के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए ।
- हमें उनके प्रति संवेदनशील रहना चाहिए तथा सहानुभूति पूर्ण रवैया अपनाना चाहिए।

खुश रहिए ! मुस्कराते रहिए ! स्वस्थ रहिए !